



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुउद्देशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

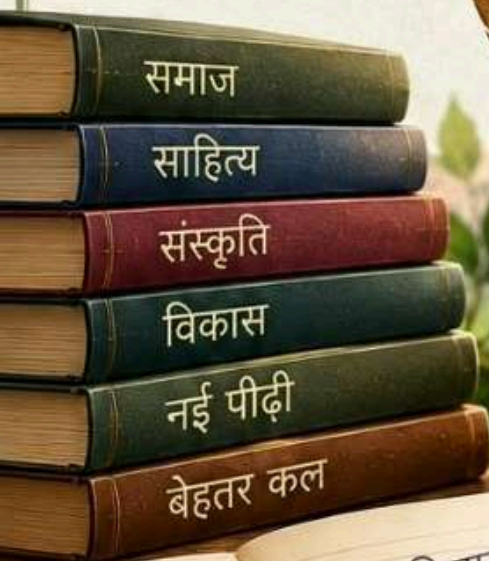
शब्द
से संवेदना तक...
लेखन से
परिवर्तन तक...

हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति

विचार...
चिंतन...
संवाद...
और
एक बेहतर
कल की ओर...

‘समसामयिक प्रश्नों पर आपकी कलम’

(लेख प्रतियोगिता)



विचारों की
स्याही से
बदलता समाज...

रचनाकार :-

रंजना पाण्डेय

आयोजक:-

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

वारासिवनी (म.प्र.)



**अन्तरा
शब्दशक्ति**

प्रकाशन एवं बहुददेशीय संस्था
www.antrashabdshakti.com

**हिन्दी
हमारी पहचान
हमारी शक्ति**

शब्द से संवेदन तक...
लेखन से परिवर्तन तक...

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

संपादक : डॉ. प्रीति समकित सुराना
तकनीकी संपादक : Webcoodee.com
मुख्य कार्यालय : 15 नेहरू चौक, वारासिवनी,
जिला बालाघाट (म.प्र.) 481331



Antrashabdshaktiprakashan

संपर्क : 9009423393
ईमेल : antrashabdshakti@gmail.com
वेबसाइट : www.antrashabdshakti.com

वैधानिक सूचना

पुस्तक में प्रकाशित सभी रचनाएँ संबंधित रचनाकारों की मौलिक अभिव्यक्तियाँ हैं।
प्रत्येक रचना में व्यक्त विचार, कथ्य एवं अभिमत के लिए संबंधित रचनाकार स्वयं उत्तरदायी हैं।
रचनाओं के चयन एवं प्रकाशन का उद्देश्य साहित्यिक अभिव्यक्ति को मंच प्रदान करना
एवं हिन्दी लेखन को प्रोत्साहित करना है।

**हिन्दी
से ही है
पहचान...**

विचार...
संवाद...
समाज...
और एक बेहतर कल...

लेख प्रतियोगिता

लेखक/लेखिका - रंजना पाण्डेय

आलेख

समाज में स्त्रियों की दशा



समाज में स्त्रियों की दशा

आज के इस नये जमाने में जहां बेटियां हर क्षेत्र में कंधे से कंधा मिलाकर चलने का प्रयास कर रही है अपितु चल रही हैं, फिर भी उनके सम्मान हनन का डर हमेशा बना रहता है।

ऐसी मानसिकता हो गई है कि लड़की को बराबरी में खड़े हुए देख पुरुष वर्ग सहजता से बर्दाश्त नहीं कर पाते, पर कुछ पुरुष ऐसे भी हैं जो बेहतर व्यवहार करते हैं।

आज अगर कोई महिला अधिकारी हो तो पुरुष बहुत असहज महसूस करते हैं, और सहयोग भी मजबूरी में ही करते हैं, सिर्फ वाणी व्यायाम से काम नहीं चलता है बराबरी कहते हैं तो सहजता से स्वीकार करना चाहिए।

हमेशा से स्त्रियों को कमजोर माना गया है। कोमल हृदय वाली कहा गया है, देवी बनाया गया है। और हम मगन हो पुरुषों के बनाए जाल में फंसते चले गए।

आज कोई भी फैसला हो पुरुष सुनाता है और वहीं स्त्रियों को अपने फैसले भी पूछ कर करने पड़ते हैं।

हम कहां गुलामी से आजाद हुए हैं आका बदल गया है हम तो गुलामी बजाएंगे वो भी पूरी तन्मयता से।

पुरुष जब काम से लौटते हैं तो सोफे पर चाय की प्याली चाहिए वहीं स्त्री जब लौटती है तो बच्चे के भूख में, रात के भोजन में और फिर सुबह की तमाम तैयारियों में।

हम कहां बराबरी कर पाएं हैं, हमें एक सामान्य सी जिंदगी चाहिए वो भी 10 में से 6 को नसीब नहीं होती है।

गांवों का हाल और भी बुरा है यहां स्त्रियां घर में भी काम करती हैं और बाहर खेतों में भी खटती हैं फिर अपने घर का खर्च भी उठाती हैं पुरुष जो कमाया पूरे दिन की थकान मिटाने के लिए मदिरा सेवन कर घर लौटता है और वहीं स्त्री लौटकर फिर से भोजन की तैयारी में जुटती है विरोध करने पर मारपीट भी करता है। अब पति है तो मारने का भी अधिकार है, चूंकि स्त्री है वह पलटवार कैसे कर सकती हैं।

यदि एक लड़की घर से बाहर निकलती है तो लौट आने तक मन बेटी पर ही लगा रहता है, देर होने पर तमाम बुरे बुरे से खयाल आने लगते हैं। अपने देश में, अपने शहर की बात छोड़िये जनाब अपने घर में भी बेटियां सुरक्षित नहीं है।

और हम बराबरी की बातें करते हैं, और आजादी की बातें करते हैं।

100 में से कम से कम 60 महिलाएं ऐसी हैं जो दूसरों के शर्तों पर जी रहीं हैं, आज भी वही स्थिति है जो 1970-80 में रही होगी मैंने वो समय भी देखा है और आज भी देख रहीं हूं स्त्रियों के स्थिती में कोई खास परिवर्तन नहीं हुआ है कल भी बहुतायत संख्या में उन्हें पढ़ने नहीं दिया जाता था आज कुछ बेहतर दशा हुई है पर उतनी नहीं जितनी होनी चाहिए थी।

इसका सबसे बड़ा कारण है स्त्रियों की दुश्मन स्त्रियां होती है और प्रायः पुरुष उन्हें ढाल बना अपनी लड़ाई लड़ता है। कुछ स्त्रियां जब खुद का निर्णय लेने के योग्य हो जाती है तो पुरुष समाज उन्हें मनबटू और बदचलन का तमका पहना देता है।

एक पुरुष अकेले रह सकता है तो एक बेटी को भी आजादी है कि अपनी जिंदगी वो अपने अनुसार जी सकती है, परंतु उसको इतनी आंखें घूरने लगती है कि उसे खुद असहज महसूस होने लगता है।

और मन में बस एक खयाल आता है कि हम क्यों नहीं अकेले जी सकते हैं हमें भी अधिकार है। पर हां यह भी बात तारिफ के काबिल है कि फिर भी बेटियां अपना हौसला बुलंद कर रहीं हैं। और ईश्वर हमेशा सबके साथ है वह स्त्री पुरुष का भेदभाव नहीं करता है। उम्मीद है एक दिन समय हमारे अनुसार बदलेगा।

- रंजना पाण्डेय



लेखक परिचय

नाम – रंजना पाण्डेय 'मुक्ता'
सीखड़, चुनार
मिर्जापुर, उत्तर प्रदेश





अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन

पं.क्र. (04/21/05/207665/19)

अन्तरा
शब्दशक्ति

www.antrashabdshakti.com
प्रकाशन एवं बहुदेशीय संस्था

कलम की शक्ति, समाज की दिशा

सम्मान-पत्र

यह प्रमाणित किया जाता है कि

आ.....**रंजना पाण्डेय**.....जी

ने हिन्दी पखवाड़े के अवसर पर आयोजित "एक लेख प्रतियोगिता" में उत्साहपूर्वक सहभागिता करते हुए **समसामयिक विषय पर अपने विचारों** को प्रभावी एवं सार्थक ढंग से अभिव्यक्त किया।

उनकी साहित्यिक **अभिव्यक्ति** एवं रचनात्मक सहभागिता की सराहना करते हुए **अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन** की ओर से यह **सम्मान-पत्र** सादर प्रदान किया जाता है।

आपकी सृजनशीलता एवं साहित्यिक यात्रा के उज्ज्वल भविष्य की हार्दिक शुभकामनाएँ।

हिन्दी विचारों को विस्तार देती है... समाज को जोड़ती है...

हिन्दी
हमारी पहचान...
हमारी शक्ति...

प्रीति सुराना

समकित सुराना

अन्तरा शब्दशक्ति प्रकाशन
एवं संस्था

डॉ. प्रीति समकित सुराना



शब्द से संवेदन तक...

लेखन से परिवर्तन तक...

